‘संदेश’ अखबार हो चाहे कोई और हो

पीत पत्रकारिता लम्बा समय नहीं चल सकती

– श्री सुरेन्द्र जैन,
राष्ट्रीय सचिव, विश्व हिन्दू परिषद

एक शब्द होता है ‘पीत पत्रकारिता’ (सिद्धांतहीन, बिकाऊ, सनसनीखेज पत्रकारिता)। यह पीत पत्रकारिता कभी भी लम्बे समय तक नहीं चल सकती। इनको एक्सपोज (बेनकाब) होना ही होता है, फिर चाहे ‘संदेश’ अखबार हो चाहे कोई और हो। क्या गुजरात के अंदर कच्छ जिले के अंदर नशीली दवाओं का व्यापार नहीं चलता ? क्या नकली करेंसी के काम नहीं चलते ? क्या जेहादी आतंकवाद का काम वहाँ नहीं चलता ? क्या ईसाई मिशनरियों के षड्यंत्र नहीं चलते ? मैं इन सब अखबारों से पूछना चाहता हूँ कि इनको यदि देश का हित करना है तो देश के खिलाफ चल रहे षड्यंत्रों का इन्होंने कितना पर्दाफाश किया है ?

क्या इनकी प्राथमिकता एक ऐसे संत के विरुद्ध विष-वमन करना है जिस संत को पूरी दुनिया पूजती है ! बापूजी एक ऐसे संत हैं जो कहीं भी जाते हैं तो लाखों लोग उनके पीछे चल देते हैं। यह भी ईर्ष्या का कारण हो सकता है और एक अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र स्पष्ट है कि इन्हें हिन्दू समाज को समाप्त करना है और उसके लिए हिन्दू समाज के जो आधार हैं उनको अपमानित करना है। संत हिन्दू समाज की आत्मा हैं, उसके प्राण हैं। उनको मालूम है कि अगर संतों को अपमानित कर दिया तो हिन्दू समाज को समाप्त करना आसान होगा। आपको ध्यान में होगा कि जितने हिन्दू-विरोधी लोग रहे हैं, चाहे विदेशी आक्रमणकारी रहे चाहे हमारी आंतरिक राजनीति का हिस्सा रहे, उन सबने हिन्दुओं पर आक्रमण करने के लिए सबसे पहले हिन्दू मंदिरों और हिन्दू संतों को ही निशाना बनाया है। मैं समझता हूँ ये भी उसी चालाकी के साथ, उसी इरादे के साथ एक अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र के अंतर्गत काम करते हैं कि हिन्दू संतों के प्रति हिन्दू समाज की आस्था को समाप्त कर दिया जाय, बाद में हिन्दू समाज को नेस्तनाबूद करना आसान होगा।

दो प्रकार के आंदोलन समाज में होते हैं। कुछ आंदोलन ऐसे होते हैं जिनको बुद्धिजीवी प्रारम्भ करते हैं और समाज साथ में लगता है। भारत का यह उदाहरण है कि यहाँ समाज का आंदोलन पहले शुरू होता है और बुद्धिजीवी बाद में उसका अनुसरण करते हैं। पूरे देश का समाज जब पूज्य आसारामजी के साथ खड़ा हुआ दिखाई देगा, तब यही बुद्धिजीवी जो चुप दिखाई देते हैं या बापूजी के खिलाफ तरह-तरह के तर्क गढ़ते हुए दिखाई देते हैं, मैं आपको इतिहास के उदाहरण देकर यह स्पष्ट कर सकता हूँ कि ये सब लोग पूज्य आसारामजी बापू की चिरौरियाँ (प्रार्थनाएँ) करते हुए और उनकी चरण-वंदना करते हुए दिखाई देंगे और वे दिन ज्यादा दूर नहीं हैं। ये निराधार लोग हैं। हमें ऐसा लगता है कि इनकी चिंता किये बिना हमें समाज को साथ रखना चाहिए और समाज के बीच में ही आंदोलन करते हुए जब हम आगे बढ़ेंगे, ये सब लोग हमारे साथ खड़े हुए दिखाई देंगे। ❐